लेखा-योग

१९९८-९९ में विदेशी अभिदाय का अन्तः प्रवाह

अङ्क ९२ जून-०३, (मई- ०४ में प्रकाशित)

इस अङ्क में

कुल प्राप्तियाँ	१	२५ शीर्ष दान ग्रहीता संस्थाएँ	३
अभिदाय के स्रोत	१	राज्यवार प्राप्तियाँ	३
प्राप्ति के उद्देश्य	२	१ करोड़ से अधिक	४
२५ शीर्ष दातव्य संस्थाएँ	२	बीमारू राज्यों को क्या मिलता है?	४

अकाउण्टेबल ५० में, वर्ष १९९७-९८ में प्राप्त विदेशी अभिदाय का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था। इस अङ्क में हम उसी तरह का विश्लेषण वर्ष १९९८-९९ के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

कुल प्राप्तियाँ

वर्ष ९८-९९ में १३,७७५ संस्थाओं ने विअ- ३ विवरण प्रेषित किया। उन्होंने कुल ३,४०२.९० करोड़ रुपयों की प्राप्ति का विवरण दिया। वर्ष ९७-९८ में यह आँकड़ा २,८६४.५१ करोड़ था।

पिछले सात वर्षों (१९९२-९३ से १९९८-९९ तक) में अभिदाय की वार्षिक बढ़ोतरी १३.६ प्रतिशत की दर से हुई। औसत अभिदाय की प्राप्ति प्रति संस्था ९२-९३ में १५.५३ लाख से बढ़ कर १९९८-९९ में २४.७ लाख तक हो गई है।

अभिदाय के स्रोत

यह अभिदाय कहाँ से आता है? प्रतिवेदन सूची में १३५ देशों के नाम हैं, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका (८९२.४३ करोड़ रुपये) से ले कर लाओस (१,००० रुपये!) तक सम्मिलित हैं। साथ ही इस सूची में एक श्रेणी 'छोटे दाता' है - इनका अंशदान कुल ३७.४४ करोड़ रुपये है।

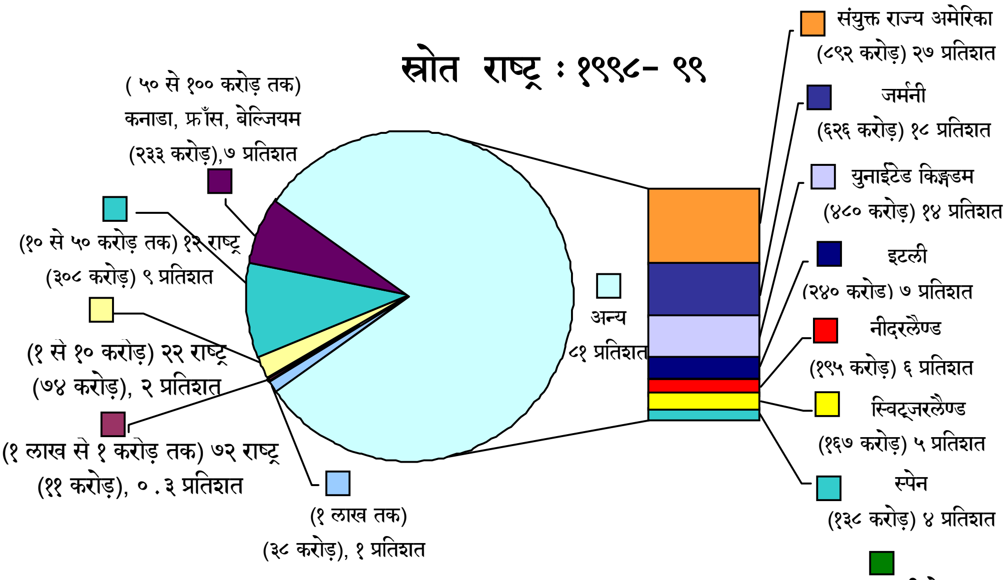

बड़े वृत के साथ दी गई पट्टी में दिखाया गया है कि सात पश्चिमी देश कुल अभिदाय का ८१ प्रतिशत धन भेजते हैं जो कि २,७३९ करोड़ रुपये है। उसके बाद तीन देशों के नाम आते हैं - कनाडा (७९.१७ करोड़), फ्राँस (७८.२३ करोड़) तथा बेल्जियम (७५.१८ करोड़)।

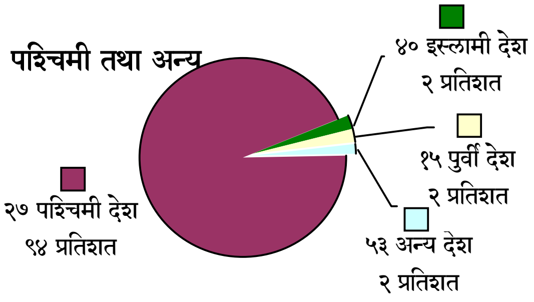

छोटा वृत एक और दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। ९४ प्रतिशत अभिदाय

पश्चिमी देशों से आता हैं। इस्लामी देशों, पूर्वी देशों तथा अन्य देशों से अभिदाय केवल ६ प्रतिशत ही है।

प्राप्ति के उद्देश्य

उद्देश्यों का विश्लेषण सम्भवतः इतना विश्वसनीय न हो, क्योंकि अधिकतर जनसेवी संस्थाएँ अपने व्ययों का सटीक वर्गीकरण नहीं कर पाती हैं। परन्तु, फिर भी जानकारी के लिये इसे यहाँ दिया गया है।

इस वर्ष दो उद्देश्यः- धार्मिक कार्यकलाप तथा अनुसन्धान पिछले वर्ष की अपेक्षा बढ़त दिखा रहे हैं।

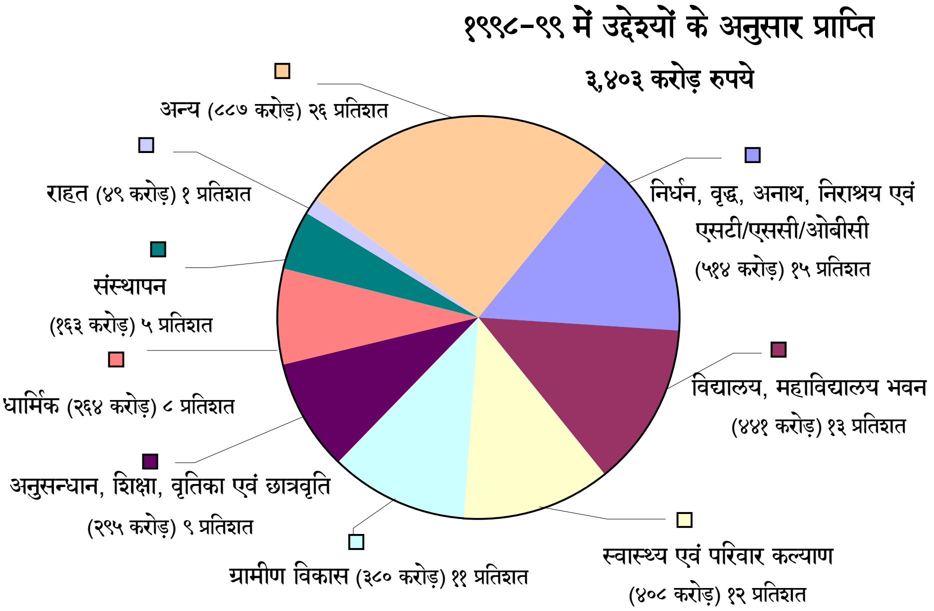

इस वर्ष के वर्गीकरण में पाँच नये विषय भी हैं। इसमें स्थापना व्यय भी सम्मिलित है, जिस पर ५ प्रतिशत व्यय दिखाया गया है।

२५ शीर्ष दातव्य संस्थाएँ

विअविअ वृतान्त में २५ बड़ी दातव्य संस्थाओं की सूची दी गई है। इन दातव्य संस्थाओं का संयुक्त अभिदाय ७९४.२४ करोड़ रुपये जो कुल अन्तः प्रवाह का २३ प्रतिशत है।

इन आँकड़ों में द्विदेशीय अभिदाय (विदेशी शासन से भारतीय शासन को) या संयुक्त राष्ट्र से प्राप्त अभिदाय सम्मिलित नहीं है।

	संस्था	देश	रुपये (करोड़ में)
१	ई जेड ई	जर्मनी	५५.०३
२.	महर्षि आयुर्वेद ट्रस्ट	युनाइटेड किङ्गडम	५१.८२
३.	एक्शनएड	युनाइटेड किङ्गडम	४८.०५
४.	मिस्सिओ	जर्मनी	४३.७८
५.	फॉस्टर पेरेन्टस् प्लान इण्टरनेशनल	संयुक्त राज्य अमेरिका	४३.१९
६.	क्रिश्चियन चिल्ड्रन्स फण्ड	संयुक्त राज्य अमेरिका	४२.६७
७.	मानोस युनिडास कमेटी	स्पेन	४१.४९
८.	एज ऑफ एन्लाइटनमेण्ट ट्रस्ट	युनाइटेड किङ्गडम	४०.४३
९.	वर्ल्ड विज़न इण्टरनेशनल	संयुक्त राज्य अमेरिका	३८.८३
१०.	मिज़िरियोर	जर्मनी	३५.५२
११.	फाउण्डेशन विन्सेण्ट फैरर	स्पेन	३४.६०
१२.	किण्डर नॉट हिल्फी	जर्मनी	३३.४३
१३.	यू एस एड	संयुक्त राज्य अमेरिका	२७.२१
१४.	फोर्ड फाउण्डेशन	संयुक्त राज्य अमेरिका	२६.५९
१५.	इण्टर चर्च कोआर्डिनेशन कमेटी (इक्को)	नीदरलैण्ड	२५.८६
१६.	बिलान्स	नीदरलैण्ड	२३.४६
१७.	माता अमृतानन्दमयी सेण्टर	संयुक्त राज्य अमेरिका	२२.७१
१८.	चिल्ड्रन हाउस इण्टरनेशनल	संयुक्त राज्य अमेरिका	२२.३७
१९.	क्रिश्चियन एड	युनाइटेड किङ्गडम	२२.३१
२०.	द लेप्रसी मिशन	युनाइटेड किङ्गडम	२२.१९
२१.	इण्टरनेशनल प्लाण्ड पेरेण्टहुड फेडरेशन	युनाइटेड किङ्गडम	२०.९८
२२.	औक्सफैम (इण्डिया) ट्रस्ट	युनाइटेड किङ्गडम	१८.७२
२३.	प्लान इण्टरनेशनल	युनाइटेड किङ्गडम	१८.३७
२४.	हिवोस फाउण्डेशन	नीदरलैण्ड	१७.४४
२५.	मिस्सियो प्रोकूर	जर्मनी	१७.१९

२५ शीर्ष दान ग्रहीता संस्थाएँ

इस धन को कौन प्राप्त करता है? १३,५०० से भी अधिक संस्थाओं की एक लम्बी सूची है जिन्होंने इस अभिदाय को प्राप्त किया है। २५ शीर्ष दान ग्रहिताओं की सूची अधिक प्रबन्धनीय है।

परन्तु, यह सूची थोड़ा दिग्भ्रमित करने वाली है। इस सूची में जनसेवी संस्थाएँ तथा दातव्य संस्थाएँ दोनों हैं। संयुक्त रूप से इन २५ संस्थाओं ने ६९३ करोड़ रुपये या कुल अन्तः प्रवाह का २० प्रतिशत प्राप्त किया। इसमें से २६ प्रतिशत (१८२ करोड़) दातव्य संस्थाओं ने प्राप्त किया। इन्हें सारणी में अलग से नीचे दिखाया गया है।

संस्था	राज्य	रुपये (करोड़ में)
१. महर्षि वेद विज्ञान विश्व विद्या पीठं	आन्ध्र प्रदेश	६४.३८
२. माता अमृतानन्दमयी मिशन	केरल	५१.५५
३. वर्ल्ड विज़न	तमिलनाडू	३९.९४
४. श्री सत्य साँई सेन्ट्रल ट्रस्ट	आन्ध्र प्रदेश	३९.७५
५. रूरल डेवलपमेण्ट ट्रस्ट	कर्नाटक	३४.२५
६. मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी	पश्चिम बङ्गाल	२९.१७
७. एस ओ एस चिल्ड्रन्स् विलेज	दिल्ली	२८.०४
८. सेवन्थ डे एडवेण्टिस्ट	तमिलनाडू	२७.४६
९. तिब्बतन चिल्ड्रन्स् विलेज	हिमाचल प्रदेश	२७.४४
१०. सिफ्पसा	उत्तर प्रदेश	२७.०६
११. लेप्रसी मिशन ट्रस्ट	दिल्ली	२३.७२
१२. सी एस आई काउन्सिल फॉर चाइल्ड केअर	कर्नाटक	२२.२४
१३. लीलावती के एम एम टी	महाराष्ट्र	१७.१४
१४. एस आर एम फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया	दिल्ली	१६.९२
१५. इण्डिया कैम्पस क्रुसेड फॉर क्राइस्ट	कर्नाटक	१५.८८
१६. मयराडा	कर्नाटक	१५.२५
१७. एसेम्बलीज़ ऑफ गॉड चर्च	पश्चिम बङ्गाल	१५.०९
१८. दलाईलामा सेन्ट्रल तिब्बतियन रिलीफ कमेटी	हिमाचल प्रदेश	१४.८७
दातव्य संस्थाएँ		
१. फौस्टर पेरेण्टस् प्लान इण्टरनेशनल	दिल्ली	४२.९१
२. एक्शनएड	कर्नाटक	३६.४३
३. चर्च आक्सिलियरी फॉर सोशल एक्शन (कासा)	दिल्ली	२४.२९
४. औक्सफैम (इण्डिया) ट्रस्ट	दिल्ली	२१.९१
५. फैमिली प्लानिङ्ग एसोसिएशन ऑफ इण्डिया	महाराष्ट्र	२१.२०
६. इन्डो-जर्मन सोशल सर्विस सोसायटी	दिल्ली	१८.८२
७. कैरिटास इण्डिया	दिल्ली	१६.८२

राज्यवार प्राप्तियाँ

वर्ष १९९८-९९ में सत्रह राज्यों ने ३,३३०.७५ करोड़ या कुल अन्तः प्रवाह का ९८ प्रतिशत प्राप्त किया। शेष २ प्रतिशत बाकी ९ राज्यों तथा ५ केन्द्र शासित प्रदेशों को गया। विवरण यह भी दर्शाता है कि लक्षद्वीप में कोई संस्था नहीं है, इसलिए वहाँ कोई धन की प्राप्ति नहीं हुई है।

राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	करोड़ १९९८-९९	प्रतिशत
१. आन्ध्र प्रदेश	४८७.२९	१४.३
२. दिल्ली	४८७.२८	१४.३
३. तमिलनाडू	४८६.३६	१४.३
४. कर्नाटक	३५४.७३	१०.४
५. महाराष्ट्र	३२२.६१	९.५
६. केरल	३२२.४२	९.५
७. पश्चिम बङ्गाल	२१६.४२	६.४
८. उत्तर प्रदेश	१३३.८७	३.९
९. गुजरात	१०२.०९	३.०

राज्य / केन्द्र शासित प्रदेश	करोड़ १९९८-९९	प्रतिशत
१०. बिहार	१००.६०	३.०
११. मध्य प्रदेश	८०.६७	२.४
१२. उड़ीसा	६८.५२	२.०
१३. हिमाचल प्रदेश	६४.३२	१.९
१४. राजस्थान	३०.४७	०.९
१५. मेघालय	२६.२९	०.८
१६. पञ्जाब	२३.८३	०.७
१७. असम	२२.९८	०.७
१८. अन्य	७२.१५	२.०

१ करोड़ से अधिक

लगभग ६२७ (४ .६ प्रतिशत) संस्थाओं ने ९८-९९ में प्रति संस्था १ करोड़ से अधिक का अभिदाय प्राप्त किया है। अन्य १३,१४८ (९५ . ४ प्रतिशत) संस्थाओं ने प्रति संस्था १ करोड़ रुपये से कम का अभिदाय प्राप्त किया है।

१ करोड़ रु० से अधिक प्राप्त करने वाले सङ्गठन

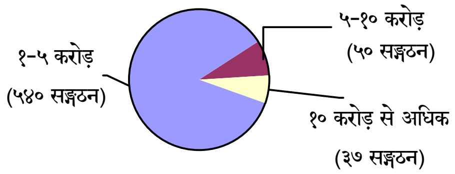

बीमारू राज्यों को क्या मिलता है?

बीमारू शब्द बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश, के संक्षिप्ताक्षरों से बना है। इन चारों राज्यों में सामाजिक व आर्थिक सूचकाँक (आर्थिक निर्धनता एवं रहन-सहन के संदर्भ में) बहुत ही प्रतिकूल है। यह राज्य कितना धन प्राप्त करते हैं? सारणी यह दर्शाती है कि इन राज्यों को विदेशी अभिदाय का १० प्रतिशत ही प्राप्त होता है।

ऐसा कई कारणों से होता है :

- इन राज्यों में, संस्थाओं की अपेक्षाकृत कम अवशोषक क्षमता तथा इसके साथ ही संस्थाओं का कम होना - इन राज्यों में विअविअ पञ्जीकृत संस्थाओं की संख्या ४,१७४ है। यह भारत में विअविअ के अन्तर्गत पञ्जीकृत कुल संस्थाओं का १५.६ प्रतिशत है।
- आँग्ल भाषा में सम्पर्क करने में असमर्थता, जो कि अधिकतर दातव्य संस्थाओं की अधिमानित भाषा है।
- विअविअ निधि का एक राज्य से दूसरे राज्य में आवागमन का दोषपूर्ण पथन तथा विश्लेषण।

राज्य	१९९८-९९	प्रतिशत
बिहार	१००.६०	२.९
मध्य प्रदेश	८०.६७	२.४
राजस्थान	३०.४७	०.९
उत्तर प्रदेश	१३३.८७	३.९
बीमारू राज्य	३५४.६१	१०.१
अन्य राज्य	३,०५७.३९	८९.९
योग	३,४०२.९०	१००.०

इस अङ्क में दिया गया विश्लेषण, गृह मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित "विदेशी अभिदाय का अन्तः प्रवाह प्रतिवेदन १९९८-९९" के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इस प्रतिवेदन में विदेशी अभिदाय के बहुत से मूल्यवान आँकड़े जुटाए गए हैं। इस जानकारी को सीमित संसाधनों द्वारा कठिन परिश्रम करके संग्रहीत करने के लिए, हम विअविअ विभाग का साधुवाद करते हैं।

प्रस्तुत विश्लेषण की कुछ सीमाएँ हैं। यदि इसे सावधानी से न पढ़ा जाए, तो दोषपूर्ण निर्वचन हो सकता है। अतः आप से निवेदन है कि प्रत्येक सारणी के साथ दी गई टिप्पणी को अवश्य पढ़ें।

❑ माल (वस्तु) के रूप में प्राप्त विदेशी अभिदाय का कभी-कभी मूल्याङ्कन नहीं होता या उनकी सूचना सम्बधित जनसेवी संस्था द्वारा नहीं दी जाती। फलतः आँकड़ें तथा विश्लेषण उसी के अनुसार बिगड़ेंगे।

❑ इस आँकड़े में शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक या आर्थिक कार्यक्रमों के लिए प्राप्त धन सम्मिलित है। यह धन किसी 'समाज-परिवर्तन संस्था' विकास संस्था, धार्मिक निकाय, विश्वविद्यालय, चिकित्सालय तथा सरकार द्वारा स्थापित जनसेवी सस्था द्वारा प्राप्त किया गया हो सकता है। किसी विशेष वर्गीकरण के अभाव में तथा पढ़ने की सुविधा के लिए हमने सबके लिए जनसेवी संस्था शब्द का प्रयोग किया है।

❑ विअविअ विभाग ने जनसेवी संस्थाओं तथा अनुदान देने वाली दातव्य संस्थाओं के बीच कोई भेद नहीं किया है। हमने उन संस्थाओं के लिए,जो मुख्यतः अन्य संस्थाओं को अनुदान देती है "दातव्य संस्था" शब्द का प्रयोग किया है।

❑ एक करोड़ = १०,०००,००० । वर्तमान में भारतीय एक करोड़ रुपये २२७,००० अमेरिकी डालर के बराबर हैं। एक लाख = १००,०००

लेखा·योग क्या है - 'मानक हिन्दी कोश' के अनुसार योग के कम से कम ४० अर्थ होते हैं। गणित में योग का अर्थ है दो संख्याओं को जोड़ना। आध्यात्मिक रूप से योग का अर्थ तपस्या अथवा साधना होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने निष्काम कर्म को योग बताया है। लेखा कर्म में यह तीनों भाव अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यदि लेखाकार लेखा लिखने और योग लगाने में योगफल की चिन्ता न करें तो अवश्य ही संस्थाओं के लेखा-जोखा में सुधार होगा। लेखा·योग का यही उद्देश्य है।

लेखा·योग हर माह प्रकाशित होता है। इसमें जन-सेवी संस्थाओं के नियमन व लेखा प्रणाली से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा की जाती है। यह विभिन्न जन-सेवी संस्थाओं, दातव्य संस्थाओं, व अङ्केक्षण प्रतिष्ठानों (ऑडिट फर्म) में लगभग १७०० व्यक्तियों को वितरित किया जाता है। लेखा·योग के प्रत्युत्पादन या पुनर्वितरण को अकाउण्टएड इण्डिया प्रोत्साहित करता है यदि ऐसा अव्यवसायिक उद्देश्य से किया जाए एवं इनके स्रोत को अभिस्वीकार किया जाए।

आँग्ल भाषा में लेखा·योग - This issue of Lekha·Yog is available in English as AccountAble.

लेखा·योग का वाभ-स्वरूप - लेखा·योग के सभी पुराने अङ्कों के आँग्ल संस्करण (AccountAble) हमारे वाभ-स्थल www.AccountAid.net पर उपलब्ध हैं। इनका हिन्दी वाभ-स्वरूप कुछ समय पश्चात् प्राप्त हो सकेगा।

लेखा·योग सम्पुटिका - जनसेवी संस्थाओं के लेखा तथा इससे सम्बन्धित छोटी-छोटी जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए कृपया इस पते पर ई-प्रेष करें।

accountaid-subscribe@topica.com.

विधि-व्याख्या - यहाँ पर उल्लेखित विधि की व्याख्या साधारण जानकारी हेतु की गयी है। अतः निवेदन है कि कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पूर्व अपने परामर्शदाताओं से सम्मति ले लें।

पत्राचार - आपके प्रश्नों और सुझावों का स्वागत है। हमारा पता है - अकाउण्टएड इण्डिया, ५५-ए, खण्ड सी, सिद्धार्थ विस्तार, नई दिल्ली-११० ०१४; दूरभाष - ०११-२६३४ ३१२८, २६३४ ६१११; प्रतिरूप प्रेषिका - २६३४ ३८५२; ई-प्रेष accountaid@vsnl.com.

© AccountAid™ India राष्ट्रीय शक संवत् वैशाख १९२६; मई २००४ ईस्वी